सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

फरीदाबाद, दिनांक 12 जुलाई 2015

! राधा–स्वामी.!

आप सबको भगवान के दर्शन चाहिए ना, आप सबकी इच्छा है ना कि आप सबको भगवान के दर्शन हो जाएं, भगवान के दर्शन हो सकते हैं , जब भगवान का कोई रूप आकार हो।

''नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे''

जब जिस चीज का कोई आकार ही नही है उसके दर्शन कैसे करोगे? कहाँ से लाओगे वो आकार, अगर भगवान के दर्शन करने हैं तो वो एक ही जगह है और वो है मन की शांती, अपने मन में शांती ले आओ, वो ही भगवान के दर्शन हो गए आपको, अब आप पूछोगे कि मन की शांती में कहाँ हैं भगवान के दर्शन, भगवान है क्या? क्या भगवान आसमान में लटक रहा है? ऐसा कुछ नही है, भगवान एक शक्ति है, एक Energy है जिसको अंग्रेजी में बोलते है World Conciusness वो हैं भगवान का रूप, उसका कोई आकार नही है, दाता दयाल कहते हैं

''नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे''

हम सब उसी के रूप हैं, हम ही हैं और कोई नही है, जो कुछ है हम ही हैं और जो कुछ मिलेगा अपने मैं ही मिलेगा, बाहर कहीं नही मिलेगा, आपको

भगवान के दर्शन करने हैं ना? वो अंदर ही मिलेंगे, बाहर कहीं नही मिलेंगे, भगवान का रूप क्या है? भगवान का रूप है, जब आप शिव शंकर का रूप देखते हो तो वे समाधि में होते हैं। उसमें ना काम है, ना क्रोध है, ना लोभ है, ना ईर्ष्या है, ना मोह है, कुछ भी नही है उसमें एक दम मन साफ और जब मन साफ हो जाता है तो वहाँ क्या आता है? वहाँ आती है मन की शांती और वही उस मालिक का रूप है। अगर तुम्हारे पास मन की शांती है तो दुनिया के सारे खजाने तुमको मिल जाएंगे। कोई कहेगा कि मैं तुमको 10 करोड रू0 देता हूँ मुझे अपने मन की शांती दे दो, आप इंकार करोगे, बोलेगे अगर तुम मुझे 100 करोड भी दोगे तो मैं अपने मन की शांती नही दूंगा, क्यों? मन की शांती मिलने से हमें क्या होता है? मन की शांती मिलने से हम उसी भगवान का रूप बन जाते हैं और अगर आपको गुरू से कुछ मांगना है तो मन की शांती मांगो इसके बराबर दुनिया के सारे खजाने बेकार हैं। क्यों? जब आपके मन के अंदर शांती आ जाती है तो आपके अंदर एक खुशी पैदा हो जाती है, आप हमेशा खुश रहते हो, प्रसन्न रहते हो ओर जो हमेशा खुश रहता है, प्रसन्न रहता है वही तो भगवान है, और कौन सा भगवान है? वही तो भगवान है जो हमेशा खुश रहे, हमेंशा प्रसन्न रहे और उसके मन में कोई इच्छा ना हो। हमारी खुशी और प्रसन्नता कैसे दूर भाग जाती है? इसका दुश्मन कौन है? हमारी खुशी और प्रसन्नता का दुश्मन है हमारी इच्छाएँ, हमारे मन की शान्ती का दुश्मन है हमारी इच्छाएँ और ये इच्छाएँ एक जाल हैं, आपके मन में एक इच्छा पैदा हुई, अगर वो पूरी नही हुई तो आप दुखी, हमारे दुखों का कारण ही ये है कि हमारी इच्छाएँ पूरी नही होती, अगर इच्छा पूरी हो गई तो लालच बढ गया, चलो दूसरी इच्छा करते हैं, दूसरी पूरी हो गई, तो तीसरी इच्छा और फिर चौथी और इस तरह आप इच्छाओं के जाल में फंसते जाओगे। अब सवाल यह है कि आप इच्छा करो ही क्यों? जब हमारा जन्म होता है तो हमारा भाग्य लिखा जाता है और भाग्य कैसे लिखा जाता है हमारे प्रारब्ध कर्मों के हिसाब से और ना इसमें कोई एक कम कर सकता है और ना कोई एक ज्यादा कर सकता है, अब सोचने की बात है जब हमारा भाग्य निश्चित हो गया फिर हमारी इच्छा करने ना करने से क्या फायदा? क्योंकि जो मिलना है मिल जाएगा फिर हम इच्छा क्यों करें? लेकिन हम इच्छा करते हैं, जाल, काल का जाल, हमको इस संसार में फंसाये

रखने के लिए हम इच्छा करते हैं और जब हम इच्छा करते हैं तो हम उस विधाता जिसने हमारा भाग्य लिखा है उसकी गलती निकालते हैं। हमारे भाग्य में दो मकान हाने चाहिए थे, तूने एक ही क्यों दिया, हमें एक मकान ओर दे दो और हमने एक मकान की इच्छा ओर की, हमने उसकी गलती निकाली और हमारा कर्म बन गया ओा यह कर्म हमको भुगतना पडेगा और हमारे दुख के दिन फिर से शुरू, जब उसने हमारा भाग्य पहले लिख दिया, उससे कोई गलती नही होती है, वो आपके प्रारब्ध कर्म देखता है, संचित कर्म देखता है और आपका भाग्य लिखता है इस जन्म का और उसी दिन हम प्रवेश हो जाते हैं इस जन्म में। ये संचित कर्म क्या हैं? जो आपके पिछले अच्छे कर्म हैं उनको संचित कर्म हैं उनको संचित कर्म बोलते हैं और जो आपके पिछले बुरे कर्म हैं उनको प्रारब्ध कर्म बोलते हैं और दोनो साथ–साथ चलते हैं, अगर आपके जीवन में कोंई खुशी आई तो समझो तुम्हारा पिछला कोई संचित कर्म आ गया और कोई दुख आया तो समझो तुम्हारा कोई पिछला बुरा कर्म आगे आ गया। जब हमारा सारा भाग्य पहले ही लिख गया ओर उसमें हम ना एक कम कर सकते हैं और ना एक ज्यादा कर सकते हैं, कोई भी उसमें एक ना बढा सकता है और ना एक कम कर सकता हैं, फिर हम इच्छा क्यों करें? हम क्यों अपने कर्मों की टोकरी जो साथ लाए हैं उसको और भारी करें? अगर टोकरी में एक भी कर्म रह गया, फिर से जन्म। शब्दानन्द महाराज कहते थे One Mark Less, One Year More यानि की हमको परीक्षा में 33 नॅम्बर लाने हैं, हमको 32 नम्बर आ गए, फिर से वही स्कूल, फिर से वही अध्यापक, फिर से वही किताबें, सिर्फ 1 नम्बर कम आने से, इसी तरह हमारी टोकरी में एक कर्म भी कम रह गया फिर से जन्म और हम फिर से जन्म लेंते हैं तो हम टोकरी को ओर भी भारर करते हैं। ये जो जन्म हमको मिला है ये मत समझो ये जन्म हमको मिला है मौज मस्ती करने के लिए, शराब पीने के लिए, बच्चे बनाने के लिए, ये जन्म हमको इसलिए नही मिला है। ये जन्म मालिक ने एक और मौका दे दिया कि तुम्हारा अंतिम जो घर है, वो मैं हूँ, वो धुरपद धाम है और वहीं तुमको आना है और एक दिन जरूर आना है और कब आओगे ये तुम्हारे हाथ में है। मालिक ने एक अवसर दे दिया अब इस अवसर को हम गवाएँ या इसका लाभ उठाएँ। ये जो मनुष्य जन्म है ये सबसे दुर्लभ जन्म है, क्यों है ये सबसे दुर्लभ जन्म? क्योंकि मुक्ति इसी मनुष्य जन्म में होती है और मुक्ति किसी जन्म में नही है। देवताओं को भी मुक्ति नही है, अगर मुक्ति है तो मनुष्य जन्म में है और मालिक हमको बार–बार मौका देता है, जन्म को सुधरो, जन्म को सुधारो, कर्मों की टोकरी को खाली करके आओ मेरे पास, वो हाथ फैलाकर तैयार है, लेकिन हम ही तैयार नही हैं, क्यों? क्योंकि हम इस संसार की मोह माया में फँसे हुए हैं ओर बुरी तरह फँसे हुए हैं। देखो हम समझते हैं कि हम आजाद पक्षी हैं? हम आजाद पक्षी नही हैं, इस संसार की मोह ाया में बुरी तरह फँसे हुए हैं और इस मोह माया से छूटने का कोई रास्ता नही है हमारे पास, हाँ एक ही रास्ता है, कबीर सहाब कहते हैं–

''सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रत्न यही है''

अगर इस संसार में कोई दुर्लभ रत्न है वो है सतगुरू, वो ही आपको बंधन से छुडा सकता है। जिसको बोलते हैं जड–चेतन की गाँठ, जड हमारा शरीर है और चेतन हमारी आत्मा है। इस संसार का नियम है जो चीज जहाँ से आई है उसको वही जाने की इच्छा रहती है हमेशा, ये शरीर संसार से आया है और आत्मा मालिक से आया है और आत्मा की हमेशा इच्छा रहती है कि मैं मालिक से मिलूं और शरीर की इच्छा रहती है कि मैं संसार से मिलूं, इसी को बोलते हैं जड–चेतन की गांठ और ये गांठ हमारे दोनो आँखो के मध्य (बीच) में हैं। इस गांठ को खोलना है और जब ये गांठ खुल जाती है तो क्या होता है? ये शरीर संसार की तरफ चला जाता है और आत्मा मालिक की तरफ चली जाती है, ये जड चेतन की गांठ कौन खोलता है? जड चेतन की गांठ खोलने वाला एक ही आदमी है इस संसार में, वो है सतगुरू, सतगुरू के पास ऐसी कौन सी जादू की छडी है जिससे ये गांठ खुल जाती है? उस छडी का नाम है सत्संग।

कबीर साहब कहते हैं सत्संग में आया करो तुम्हारी बिगडी बात बन जाएगी। हमारी बिगडी बात क्या है? हमारी बिगडी बात यही है जड–चेतन की गांठ और गुरू कहता है सत्संग में आया करो, सत्संग में आने से क्या होगा? कबीर सहाब कहते हैं

सत्संग सिला पर, मल–मल धोए,

ज्ञान का साबुन लगाए, मन की मैल उतारे।

गुरू सत्संग से आपके मन की मैल उतार देता है, गुरू के पास और कोंई चमत्कारी छडी नही है, सिर्फ एक ही छडी है और वो है गुरू के वचन और गुरू के वचन क्या हैं? एक झाडू है जो हमारे मन के ऊपर मैल जमी है ना उसको धीरे–धीरे साफ करता है।

एक सीधा–साधा मनुष्य जल्दी तर जाता है और एक पढा लिखा बुद्धिमान मनुष्य रह जाता है क्योंकि वो हर बात में तर्क करता है, How & Why करता है, ये कैसे हुआ? कौन जबाब दे सकता है उसे? वो पूछेगा ये अरबो–खरबों चाँद–सितारे कैसे बने? कोई जबाब दे सकता है उसको? कोई जबाब नही दे सकता, लेकिन क्या है, हमको एक अंधविश्वास करना है, हमको ये समझना है, हाँ ये सब उस एक मालिक ने बनाया है, जिसने भी अंधविश्वास किया वो तर गया, जिसने भी सोचा ये कि ये कैसे बन गया, सूरज इतनी गर्मी क्यों देता है, ये रात को कहाँ छुप जाता है, वो रह गया।

एक बार महाराज जी (शब्दानंद जी) के साथ हम छैरा गए थे, अब हम वहाँ से आने वाले थे, ड्राईवर ने चाबी गाडी की डिग्गी में लगाई और बाहर निकाली तो चाबी आधी अंदर और आधी बाहर आ गई, चाबी टूट गई, अब क्या करें? हम सब बैठ गए और सारा गांव लग गया चाबी को निकालने में, पता नही किसी को अक्ल आ गई उसने बोला ताला ही निकाल लो, ताला बाहर निकाल लिया, अब ये सब शुरू हो गया शुबह 2.00 बजे से 4.00 बजे तक, अब 4.00 बजे एक फोन आता है, वहाँ कहीं दूर एक गांव है और उस गांव से दो औरतें निकली है शुबह से भूखी, नंगे पैर, पैदल और कह रही हैं हमें महाराज जी के दर्शन करने हैं और 4.30 बजे वो महाराज जी के पास आ गई, महाराज जी ने उनको बैठाया, खाना खिलवाया और उनको अपने दर्शन दिए और उनको नाम दान भी दे दिया और उधर से खबर आ गई कि चाबी निकल गई। देखो हमारा कोई नुकसान नही हुआ, जहाँ से चाबी टूटी वहीं से जोईन्ट हो गई, लेकिन कोई शक्ति काम कर रही थी। वो दो औरतें शुबह से निकली थी पैदल, नंगे पैर और उनके मन में था कि हमकों महाराज जी के दर्शन करने हैं। अब बताओ इसमें कहाँ से How & Why आ गया, कौन बतायेगा ये कैसे और क्यों हुआ? इसका कोई जबाब नही है, ये सिर्फ अंधविश्वास का खेल है, जिसने अंधविश्वास किया वो तर गया और जिसने ये क्या है? और वो क्या है? किया, वो रह गया।

! राधा स्वामी !